International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-05-2026, Accepted: 01-06-2026, Published: 16-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 194-200

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण

चंदा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, मैत्रेय कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, हाजीपुर, बिहार, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12166

सारांश
ममता कालिया समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथाकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज, विशेषतः मध्यवर्गीय स्त्री जीवन की जटिलताओं, संघर्षों एवं यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र "ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण" उनके प्रमुख उपन्यासों के आधार पर स्त्री जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि ममता कालिया ने स्त्री की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका, आर्थिक संघर्ष, आत्मचेतना, अस्मिता तथा स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा को किस प्रकार चित्रित किया है। शोध के दौरान यह पाया गया कि ममता कालिया के उपन्यासों की स्त्रियाँ पारंपरिक बंधनों से जूझते हुए अपने आत्मसम्मान और पहचान की खोज करती हैं। वे केवल गृहिणी या पारिवारिक उत्तरदायित्वों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि शिक्षित, आत्मनिर्भर एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में उभरती हैं। उनके साहित्य में स्त्री–विमर्श का स्वर व्यावहारिक एवं यथार्थवादी है, जो आधुनिक भारतीय स्त्री के जीवनानुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। साथ ही, उनके उपन्यासों की भाषा सरल, सहज, व्यंग्यात्मक तथा संवादप्रधान है, जो कथ्य को प्रभावशाली बनाती है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ममता कालिया ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री जीवन के सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का सशक्त चित्रण किया है। उनका साहित्य न केवल स्त्री चेतना को स्वर देता है, बल्कि समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्श को नई दिशा और दृष्टि भी प्रदान करता है।

मूल शब्दः ममता कालिया, स्त्री जीवन, नारी चेतना, स्त्री–विमर्श, मध्यवर्गीय समाज, आत्मचेतना, स्त्री अस्मिता, हिन्दी उपन्यास, महिला लेखन, सामाजिक यथार्थ

कथा–संक्षेप

हिन्दी साहित्य में महिला लेखन की एक समृद्ध परंपरा रही है, जिसमें स्त्री जीवन, उसकी संवेदनाएँ, संघर्ष, सामाजिक स्थिति तथा अस्तित्व संबंधी प्रश्नों को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में विशेष रूप से स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद स्त्री–विमर्श ने एक सशक्त साहित्यिक धारा के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। इस दौर में महिला लेखिकाओं ने केवल स्त्री की पीड़ा का चित्रण ही नहीं किया, बल्कि उसकी आत्मचेतना, स्वाभिमान, स्वतंत्रता एवं सामाजिक संघर्षों को भी स्वर प्रदान किया। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग तथा ममता कालिया जैसी लेखिकाओं ने हिन्दी कथा–साहित्य को नई दृष्टि प्रदान की। ममता कालिया समकालीन हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त कथाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की स्त्री के जीवन–संघर्ष, उसकी मनोवैज्ञानिक स्थितियों, पारिवारिक दबावों तथा सामाजिक विडंबनाओं का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण किया है। उनके साहित्य में स्त्री केवल सहनशील और परंपरागत भूमिका निभाने वाली पात्र नहीं है, बल्कि वह आत्मनिर्भर, जागरूक एवं अपने अधिकारों के प्रति सचेत व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन के विविध रूप दिखाई देते हैं। कहीं वह गृहिणी के रूप में पारिवारिक उत्तरदायित्व निभाती है, तो कहीं कामकाजी महिला के रूप में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक संघर्षों का सामना करती है। उनकी नायिकाएँ आधुनिक शिक्षा, बदलती सामाजिक परिस्थितियों तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति सजग हैं। वे पुरुषप्रधान समाज द्वारा निर्मित रूढ़ियों एवं बंधनों का विरोध करती हुई अपने अस्तित्व और पहचान की तलाश करती हैं। ममता कालिया के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसका यथार्थबोध है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं, दांपत्य संबंधों की जटिलताओं, आर्थिक संघर्षों, स्त्री–पुरुष संबंधों तथा सामाजिक विसंगतियों को अत्यंत सहज एवं प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा सरल, व्यंग्यात्मक एवं बोलचाल की शैली से युक्त है, जिससे उनके पात्र और परिस्थितियाँ अत्यंत जीवंत प्रतीत होती हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र "ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण" का उद्देश्य उनके उपन्यासों में चित्रित स्त्री जीवन के विभिन्न आयामों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। इस शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि ममता कालिया ने स्त्री की सामाजिक स्थिति, मानसिक संघर्ष, आत्मचेतना, अस्मिता तथा नारी सशक्तिकरण को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है। साथ ही, उनके उपन्यासों की भाषा, शिल्प एवं स्त्री–दृष्टि का भी आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाएगा।

यह अध्ययन न केवल ममता कालिया के साहित्य को समझने में सहायक होगा, बल्कि समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्श की प्रवृत्तियों को भी स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

ममता कालिया : जीवन एवं साहित्यिक परिचय

1. जीवन परिचय

ममता कालिया समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध एवं सशक्त कथाकार हैं। उनका जन्म 2 नवम्बर 1940 को वृंदावन (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनके पिता श्री विद्याभूषण अग्रवाल हिन्दी एवं अंग्रेज़ी साहित्य के विद्वान तथा शिक्षाविद् थे। साहित्यिक एवं बौद्धिक वातावरण के कारण ममता कालिया की रुचि प्रारम्भ से ही साहित्य–सृजन की ओर विकसित हुई। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा विभिन्न नगरों में प्राप्त की। उच्च शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की। शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात उन्होंने अध्यापन कार्य को अपनाया और विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्यापिका एवं प्राचार्या के रूप में कार्य किया। वे इलाहाबाद स्थित महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्या भी रहीं।

ममता कालिया का विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार रविन्द्र कालिया से हुआ। साहित्यिक परिवेश और वैचारिक सक्रियता ने उनके लेखन को और अधिक समृद्ध बनाया। उन्होंने अपने साहित्य में विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज, स्त्री जीवन, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक विडंबनाओं तथा बदलते जीवन–मूल्यों को अभिव्यक्ति दी।

2. साहित्यिक व्यक्तित्व

ममता कालिया हिन्दी साहित्य की बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक तथा संस्मरण जैसी विभिन्न विधाओं में महत्वपूर्ण लेखन किया है। वे विशेष रूप से कथा–साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। उनकी रचनाओं में समकालीन समाज का यथार्थ अत्यंत प्रभावशाली रूप में चित्रित हुआ है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं, स्त्री की मानसिक स्थिति, दांपत्य संबंधों की जटिलताओं तथा सामाजिक विसंगतियों को सरल, सहज एवं व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में स्त्री केवल करुणा की प्रतीक नहीं है, बल्कि आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाली जागरूक व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

ममता कालिया की भाषा बोलचाल की सहज भाषा है, जिसमें व्यंग्य एवं यथार्थ का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में कृत्रिमता नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविकता और अनुभवजन्य सत्य की अभिव्यक्ति मिलती है। इसी कारण उनका साहित्य पाठकों के साथ सीधा संवाद स्थापित करता है। समकालीन महिला लेखिकाओं में ममता कालिया का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने स्त्री–विमर्श को केवल सैद्धांतिक रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि स्त्री जीवन के वास्तविक संघर्षों और अनुभवों को साहित्य का विषय बनाया। उनकी रचनाएँ आधुनिक भारतीय स्त्री की चेतना, अस्मिता और सामाजिक स्थिति को समझने में अत्यंत सहायक हैं।

3. प्रमुख कृतियाँ

ममता कालिया ने हिन्दी साहित्य को अनेक महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रदान की हैं। उनके उपन्यास एवं कहानी–संग्रह समकालीन हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर माने जाते हैं।

प्रमुख उपन्यास

1. बेघर
2. लड़कियाँ
3. एक पत्नी के नोट्स
4. प्रेम कहानी
5. दौड़
6. दुक्खम–सुक्खम

प्रमुख कहानी–संग्रह

1. छुटकारा
2. सीट नं. छह
3. प्रतिदिन
4. मुखौटा
5. बोलने वाली औरत

इन रचनाओं में स्त्री जीवन, मध्यवर्गीय समाज, आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक विडंबनाएँ तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है।

4. साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

ममता कालिया के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. यथार्थवादी दृष्टिकोण

उनके साहित्य में जीवन की वास्तविक समस्याओं एवं परिस्थितियों का सजीव चित्रण मिलता है।

2. मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण

उन्होंने विशेष रूप से भारतीय मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं, संघर्षों और मानसिकताओं को अभिव्यक्ति दी है।

3. स्त्री चेतना

उनकी रचनाओं में स्त्री की आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र अस्तित्व की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

4. व्यंग्यात्मक शैली

उनकी भाषा में तीक्ष्ण व्यंग्य का प्रयोग मिलता है, जो सामाजिक विसंगतियों पर प्रभावशाली प्रहार करता है।

5. सरल एवं सहज भाषा

उन्होंने बोलचाल की सामान्य भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उनकी रचनाएँ अधिक प्रभावशाली एवं पठनीय बन गई हैं।

हिन्दी साहित्य में स्थान

ममता कालिया का हिन्दी कथा–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने समकालीन स्त्री जीवन की समस्याओं, आकांक्षाओं एवं संघर्षों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की। उनका साहित्य आधुनिक भारतीय समाज का यथार्थ दस्तावेज़ माना जाता है। विशेष रूप से स्त्री–विमर्श एवं मध्यवर्गीय जीवन के चित्रण के कारण वे हिन्दी साहित्य की अग्रणी महिला कथाकारों में गिनी जाती हैं। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक हैं तथा नई पीढ़ी के पाठकों और शोधार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं।

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का स्वरूप

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का बहुआयामी एवं यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उन्होंने स्त्री को केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक, आर्थिक, मानसिक तथा वैचारिक स्तर पर संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक बंधनों तथा आत्मसम्मान की खोज के बीच निरंतर संघर्ष करती दिखाई देती हैं। ममता कालिया ने स्त्री जीवन के विभिन्न रूपों को अत्यंत संवेदनशीलता एवं यथार्थबोध के साथ चित्रित किया है।

1. पारिवारिक स्त्री का स्वरूप

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री का एक प्रमुख रूप पारिवारिक स्त्री का है। उनकी नायिकाएँ पत्नी, माँ, बहू तथा गृहिणी के रूप में पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करती दिखाई देती हैं। वे परिवार की सुख–शांति बनाए रखने के लिए अनेक त्याग और संघर्ष करती हैं, किन्तु इसके बावजूद उन्हें अपेक्षित सम्मान एवं स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती। भारतीय मध्यवर्गीय समाज में स्त्री पर पारिवारिक दायित्वों का अत्यधिक बोझ होता है। ममता कालिया ने इस स्थिति का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है। उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ परिवार की आर्थिक, सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती हैं, परंतु स्वयं की इच्छाओं एवं आकांक्षाओं का दमन करने के लिए विवश रहती हैं।

'एक पत्नी के नोट्स' जैसे उपन्यास में पत्नी की मानसिक स्थिति, उसके दांपत्य जीवन की जटिलताओं तथा उपेक्षा–बोध का मार्मिक चित्रण मिलता है। यहाँ स्त्री केवल गृहस्थी संभालने

वाली पात्र नहीं है, बल्कि वह अपनी पहचान और सम्मान की तलाश भी करती है।

2. कामकाजी स्त्री का स्वरूप

ममता कालिया ने आधुनिक कामकाजी स्त्री की समस्याओं एवं संघर्षों को विशेष रूप से अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ शिक्षित एवं आत्मनिर्भर हैं, जो आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए घर से बाहर निकलती हैं। किन्तु कार्यक्षेत्र में उन्हें अनेक चुनौतियों, भेदभाव तथा मानसिक दबावों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी स्त्री को घर और नौकरी दोनों की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। इस दोहरे दायित्व के कारण उसका जीवन तनावपूर्ण बन जाता है। ममता कालिया ने इस संघर्ष को अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद मानसिक एवं सामाजिक स्तर पर पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर पाती।

'दौड़' एवं 'लड़कियाँ' जैसे उपन्यासों में आधुनिक शिक्षित स्त्री के जीवन–संघर्ष, करियर, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक दबावों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इन उपन्यासों की नायिकाएँ आत्मविश्वासी हैं, किन्तु पुरुषप्रधान समाज की मानसिकता से निरंतर जूझती रहती हैं।

3. मध्यवर्गीय स्त्री का यथार्थ

ममता कालिया के उपन्यास मुख्यतः मध्यवर्गीय समाज पर आधारित हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय स्त्री की समस्याओं, आर्थिक संघर्षों, सामाजिक मर्यादाओं तथा पारिवारिक विडंबनाओं को अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित किया है। मध्यवर्गीय स्त्री पर समाज की परंपराओं एवं नैतिक मान्यताओं का विशेष दबाव होता है। वह अपनी इच्छाओं एवं स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। आर्थिक अभाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की चिंता उसके जीवन को जटिल बना देती है। ममता कालिया ने दिखाया है कि मध्यवर्गीय स्त्री केवल बाहरी संघर्ष ही नहीं करती, बल्कि मानसिक स्तर पर भी निरंतर द्वंद्व का सामना करती है। वह आत्मसम्मान एवं सामाजिक स्वीकृति दोनों प्राप्त करना चाहती है। यही संघर्ष उनके उपन्यासों को यथार्थ के निकट ले जाता है।

4. शिक्षित एवं आधुनिक स्त्री

ममता कालिया के उपन्यासों में आधुनिक एवं शिक्षित स्त्री का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी नायिकाएँ शिक्षित, जागरूक तथा आत्मनिर्भर हैं। वे परंपरागत रूढ़ियों को स्वीकार करने के बजाय अपने अधिकारों एवं स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति सजग दिखाई देती हैं। आधुनिक शिक्षा ने स्त्री में आत्मचेतना एवं आत्मविश्वास का विकास किया है। ममता कालिया की स्त्रियाँ जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने का साहस रखती हैं। वे विवाह, प्रेम, करियर तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रश्नों पर खुलकर विचार करती हैं।

किन्तु आधुनिकता के बावजूद उन्हें सामाजिक आलोचना, पारिवारिक दबाव एवं पुरुषवादी मानसिकता का सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि उनकी नायिकाओं का संघर्ष केवल बाहरी नहीं, बल्कि मानसिक एवं वैचारिक भी है। 'लड़कियाँ' उपन्यास में आधुनिक युवा स्त्रियों की आकांक्षाओं, स्वतंत्र जीवन–दृष्टि तथा सामाजिक संघर्षों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। यहाँ स्त्री अपनी पहचान स्वयं निर्मित करना चाहती है।

5. स्त्री जीवन का मनोवैज्ञानिक पक्ष

ममता कालिया ने स्त्री जीवन के बाहरी संघर्षों के साथ–साथ उसकी मानसिक एवं भावनात्मक स्थितियों का भी सूक्ष्म चित्रण किया है। उनकी नायिकाएँ अकेलेपन, असुरक्षा, उपेक्षा, आत्मसंघर्ष तथा पहचान के संकट से गुजरती हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री के मन की संवेदनाएँ अत्यंत स्वाभाविक रूप में व्यक्त हुई हैं। वे केवल सामाजिक समस्याओं का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि स्त्री के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व को भी अभिव्यक्ति देती हैं। इस प्रकार ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण बहुआयामी, यथार्थवादी एवं संवेदनशील रूप में हुआ है। उनकी रचनाएँ आधुनिक भारतीय स्त्री के संघर्ष, चेतना, अस्मिता एवं सामाजिक स्थिति का सशक्त दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं।

उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष एवं नारी चेतना

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष एवं नारी चेतना का अत्यंत प्रभावशाली एवं यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उन्होंने स्त्री को केवल संवेदनशील एवं त्यागमयी पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे आत्मसम्मान, स्वतंत्रता एवं अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाली जागरूक व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। उनके साहित्य में स्त्री जीवन के संघर्ष सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा मानसिक स्तर पर दिखाई देते हैं। ममता कालिया की नायिकाएँ पुरुषप्रधान समाज की रूढ़ियों एवं बंधनों का विरोध करती हुई अपने अधिकारों एवं पहचान के लिए निरंतर संघर्ष करती हैं।

1. पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की स्थिति

भारतीय समाज परंपरागत रूप से पुरुषप्रधान रहा है, जहाँ स्त्री को पुरुष की अपेक्षा निम्न स्थान दिया गया। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में इसी सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत स्त्री की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। उनके साहित्य में स्त्री को परिवार एवं समाज दोनों स्तरों पर उपेक्षा, नियंत्रण तथा मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता है।

स्त्री से अपेक्षा की जाती है कि वह परिवार की मर्यादा एवं परंपराओं का पालन करे, जबकि पुरुष को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इस असमानता के कारण स्त्री के भीतर असंतोष एवं संघर्ष की भावना उत्पन्न होती है। ममता कालिया की नायिकाएँ इस पुरुषवादी मानसिकता को स्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उसका विरोध करती हैं।

'एक पत्नी के नोट्स' में पत्नी की उपेक्षित स्थिति तथा दांपत्य जीवन की असमानताओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। यहाँ स्त्री अपने अस्तित्व और सम्मान के लिए मानसिक संघर्ष करती दिखाई देती है।

2. स्त्री अस्मिता एवं आत्मसम्मान

ममता कालिया के उपन्यासों की स्त्रियाँ आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र पहचान की आकांक्षा रखती हैं। वे केवल पत्नी, माँ या गृहिणी की भूमिका तक सीमित नहीं रहना चाहतीं, बल्कि अपनी व्यक्तिगत पहचान स्थापित करना चाहती हैं। उनकी नायिकाओं के भीतर आत्मचेतना का विकास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे अपने अधिकारों, इच्छाओं तथा भावनाओं को दबाने के बजाय उन्हें अभिव्यक्त करने का साहस रखती हैं। यही नारी चेतना उनके संघर्ष का प्रमुख आधार बनती है। 'लड़कियाँ' उपन्यास में आधुनिक शिक्षित स्त्रियों की स्वतंत्र सोच, आत्मनिर्भरता तथा आत्मसम्मान की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उपन्यास की नायिकाएँ अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती हैं और सामाजिक बंधनों को चुनौती देती हैं। ममता कालिया ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्री का वास्तविक सशक्तिकरण तभी संभव है जब वह स्वयं अपनी अस्मिता एवं आत्मसम्मान के प्रति जागरूक हो।

3. आर्थिक संघर्ष एवं आत्मनिर्भरता

आर्थिक आत्मनिर्भरता को ममता कालिया ने स्त्री स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण आधार माना है। उनके उपन्यासों में अनेक स्त्रियाँ नौकरी एवं व्यवसाय के माध्यम से आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने का प्रयास करती हैं। किन्तु आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के

बाद भी उन्हें सामाजिक एवं मानसिक संघर्षों से गुजरना पड़ता है। कामकाजी स्त्री को परिवार और कार्यक्षेत्र दोनों की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। उसे पुरुष सहकर्मियों की संकीर्ण मानसिकता, सामाजिक आलोचना तथा पारिवारिक अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार उसकी स्थिति दोहरे संघर्ष से घिरी रहती है। 'दौड़' उपन्यास में आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव तथा स्त्री के संघर्षपूर्ण जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। यहाँ स्त्री आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती है, परंतु सामाजिक परिस्थितियाँ उसके लिए अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न करती हैं। ममता कालिया ने यह दर्शाया है कि आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान को मजबूत करती है, किन्तु समाज की मानसिकता में परिवर्तन के बिना उसकी पूर्ण मुक्ति संभव नहीं है।

4. दांपत्य जीवन एवं स्त्री–संघर्ष

ममता कालिया के उपन्यासों में दांपत्य संबंधों की जटिलताओं एवं तनावपूर्ण स्थितियों का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण मिलता है। पति–पत्नी के संबंधों में संवादहीनता, असमानता, उपेक्षा एवं अहंभाव जैसी समस्याएँ दिखाई देती हैं। स्त्री अपने वैवाहिक जीवन में प्रेम, सम्मान एवं समानता की अपेक्षा रखती है, किन्तु उसे अक्सर समझौता एवं त्याग करना पड़ता है। इसी कारण उसके भीतर मानसिक द्वंद्व एवं असंतोष उत्पन्न होता है।
'एक पत्नी के नोट्स' में दांपत्य जीवन की विडंबनाओं तथा पत्नी के आंतरिक संघर्ष का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। यहाँ स्त्री अपने अस्तित्व एवं भावनात्मक आवश्यकताओं की उपेक्षा से पीड़ित दिखाई देती है। ममता कालिया ने दांपत्य जीवन को आदर्शवादी दृष्टि से नहीं, बल्कि यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जहाँ स्त्री निरंतर मानसिक एवं सामाजिक संघर्षों से गुजरती है।

5. नारी चेतना एवं विद्रोह

ममता कालिया के साहित्य में नारी चेतना का स्वर अत्यंत प्रखर है। उनकी नायिकाएँ अन्याय, शोषण एवं सामाजिक बंधनों के विरुद्ध विद्रोह करती दिखाई देती हैं। वे अपनी स्वतंत्रता एवं अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और परंपरागत रूढ़ियों को चुनौती देने का साहस रखती हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री का विद्रोह केवल बाहरी नहीं, बल्कि मानसिक एवं वैचारिक भी है। वह अपनी सोच, जीवन–दृष्टि एवं निर्णयों के माध्यम से समाज की परंपरागत धारणाओं का विरोध करती है।
ममता कालिया ने यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक स्त्री केवल सहनशीलता की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह अपनी अस्मिता एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त व्यक्तित्व है। उनकी नारी चेतना समाज में स्त्री की समानता एवं सम्मान की माँग करती है। इस प्रकार ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष एवं नारी चेतना का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है। उनकी नायिकाएँ सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं मानसिक स्तर पर अनेक संघर्षों का सामना करती हैं, किन्तु वे आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र अस्तित्व के लिए निरंतर प्रयासरत रहती हैं। ममता कालिया ने स्त्री को आधुनिक चेतना से संपन्न, आत्मनिर्भर एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास समकालीन भारतीय स्त्री जीवन की समस्याओं, आकांक्षाओं एवं चेतना का सशक्त दस्तावेज़ हैं।

ममता कालिया के उपन्यासों की भाषा एवं शिल्प

ममता कालिया समकालीन हिन्दी साहित्य की ऐसी कथाकार हैं, जिनकी भाषा एवं शिल्प उनके साहित्य को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में सरल, सहज तथा बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए समाज एवं जीवन के यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी भाषा में कृत्रिमता या आडंबर नहीं है, बल्कि जीवन की स्वाभाविकता एवं अनुभवजन्य सत्य का समावेश दिखाई देता है। ममता कालिया की रचनाओं का शिल्प आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मध्यवर्गीय संघर्षों तथा स्त्री चेतना को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है।

भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

1. सरल एवं सहज भाषा

ममता कालिया की भाषा अत्यंत सरल, सहज एवं प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने कठिन एवं क्लिष्ट शब्दों के स्थान पर सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उनकी रचनाएँ पाठकों के लिए अधिक प्रभावशाली एवं बोधगम्य बन जाती हैं। उनकी भाषा जीवन के निकट प्रतीत होती है। पात्रों के संवाद एवं विचार इतने स्वाभाविक हैं कि पाठक स्वयं को कथा–परिस्थितियों से जुड़ा हुआ अनुभव करता है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में यथार्थ का प्रभाव अत्यंत गहरा दिखाई देता है।

2. बोलचाल एवं लोकभाषा का प्रयोग

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में बोलचाल की भाषा एवं लोकप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। इससे उनके पात्र अधिक जीवंत एवं वास्तविक प्रतीत होते हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज की भाषा, मुहावरों तथा दैनिक जीवन में प्रयुक्त अभिव्यक्तियों को अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा में कृत्रिम साहित्यिकता के बजाय सामाजिक जीवन की वास्तविकता झलकती है। यही विशेषता उनके साहित्य को आम पाठकों के निकट ले आती है।

3. व्यंग्यात्मक भाषा–शैली

ममता कालिया की भाषा का एक महत्वपूर्ण गुण उसका व्यंग्यात्मक स्वर है। उन्होंने सामाजिक विसंगतियों, मध्यवर्गीय मानसिकता, दांपत्य जीवन की समस्याओं तथा पुरुषप्रधान समाज की रूढ़ियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया है। उनका व्यंग्य कटु न होकर सहज एवं प्रभावशाली है। वे हास्य एवं व्यंग्य के माध्यम से गंभीर सामाजिक समस्याओं को भी सरलता से प्रस्तुत कर देती हैं। उनके व्यंग्य में सामाजिक चेतना एवं यथार्थबोध स्पष्ट दिखाई देता है।

4. मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति

ममता कालिया की भाषा स्त्री मन की सूक्ष्म संवेदनाओं एवं मानसिक द्वंद्वों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। उनके पात्रों के मनोभाव, अकेलापन, असुरक्षा, उपेक्षा एवं आंतरिक संघर्ष भाषा के माध्यम से अत्यंत स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त होते हैं।
विशेष रूप से स्त्री पात्रों की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने में उनकी भाषा अत्यंत संवेदनशील एवं प्रभावपूर्ण दिखाई देती है।

कथानक एवं शिल्प

1. यथार्थवादी कथानक

ममता कालिया के उपन्यासों का कथानक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित होता है। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज, पारिवारिक संबंधों, आर्थिक संघर्षों तथा स्त्री जीवन की समस्याओं को कथानक का आधार बनाया है। उनकी कथावस्तु में कल्पना की अपेक्षा यथार्थ का अधिक महत्व है। वे समाज की वास्तविक परिस्थितियों एवं समस्याओं को बिना किसी आदर्शवादी आवरण के प्रस्तुत करती हैं।

2. पात्र–चित्रण

ममता कालिया के उपन्यासों के पात्र अत्यंत स्वाभाविक एवं यथार्थवादी हैं। उनके पात्र किसी आदर्श छवि के प्रतिनिधि नहीं,

बल्कि सामान्य जीवन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं। विशेष रूप से उनके स्त्री पात्र आत्मसंघर्ष, अस्मिता एवं स्वतंत्रता की भावना से युक्त दिखाई देते हैं। उनकी नायिकाएँ परिस्थितियों के सामने निष्क्रिय नहीं रहतीं, बल्कि अपने अधिकारों एवं सम्मान के लिए संघर्ष करती हैं। यही कारण है कि उनके पात्र पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

3. संवाद योजना

ममता कालिया के उपन्यासों में संवाद अत्यंत स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण हैं। संवादों के माध्यम से पात्रों की मानसिक स्थिति, सामाजिक दृष्टिकोण एवं संबंधों की जटिलता स्पष्ट होती है। उनके संवाद छोटे, सारगर्भित एवं जीवन के निकट होते हैं। संवादों में कृत्रिमता नहीं दिखाई देती, जिससे कथा अधिक जीवंत बन जाती है।

4. आत्मकथात्मक शैली

ममता कालिया ने अनेक स्थानों पर आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है। इससे उनके उपन्यासों में आत्मीयता एवं विश्वसनीयता का भाव उत्पन्न होता है। उनकी रचनाओं में व्यक्तिगत अनुभवों एवं सामाजिक यथार्थ का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

यथार्थवाद एवं आधुनिकता

ममता कालिया के उपन्यासों में आधुनिक जीवन की समस्याओं एवं बदलते सामाजिक मूल्यों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उन्होंने विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज की विडंबनाओं, स्त्री जीवन के संघर्षों तथा आधुनिकता से उत्पन्न मानसिक तनावों को अभिव्यक्ति दी है। उनकी रचनाओं में आधुनिक शिक्षा, स्त्री स्वतंत्रता, दांपत्य संबंधों की जटिलता तथा बदलती सामाजिक मानसिकता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वे आधुनिक जीवन को आदर्शवादी दृष्टि से नहीं, बल्कि यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं।

प्रतीक एवं बिंब योजना

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में प्रतीकों एवं बिंबों का भी प्रभावशाली प्रयोग किया है। उनके प्रतीक सामान्य जीवन की परिस्थितियों से जुड़े हुए हैं। वे छोटी–छोटी घटनाओं एवं वस्तुओं के माध्यम से गहरे सामाजिक एवं मानसिक अर्थ व्यक्त करती हैं। उनके बिंब स्त्री जीवन की पीड़ा, संघर्ष, अकेलेपन एवं संवेदनाओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार ममता कालिया के उपन्यासों की भाषा एवं शिल्प अत्यंत प्रभावशाली, यथार्थवादी एवं आधुनिक चेतना से संपन्न हैं। उनकी भाषा सरल, सहज, व्यंग्यात्मक तथा जीवन के निकट है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज, स्त्री जीवन एवं सामाजिक विसंगतियों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

उनकी शिल्पगत विशेषताएँ—जैसे यथार्थवादी कथानक, स्वाभाविक संवाद, मनोवैज्ञानिक चित्रण एवं व्यंग्यात्मक शैली—उनके साहित्य को विशिष्ट बनाती हैं। ममता कालिया का भाषा एवं शिल्प आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य को नई दिशा एवं संवेदना प्रदान करता है।

स्त्री–विमर्श के संदर्भ में ममता कालिया

हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्श एक महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं वैचारिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ है। इसका उद्देश्य समाज में स्त्री की स्थिति, उसके अधिकारों, स्वतंत्रता, अस्मिता तथा सामाजिक संघर्षों को अभिव्यक्ति प्रदान करना है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में अनेक महिला लेखिकाओं ने स्त्री जीवन की समस्याओं एवं अनुभवों को साहित्य का विषय बनाया। ममता कालिया इसी परंपरा की महत्वपूर्ण एवं सशक्त कथाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन की वास्तविक समस्याओं, मानसिक संघर्षों, सामाजिक विसंगतियों तथा आत्मचेतना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। ममता कालिया का स्त्री–विमर्श केवल पुरुष–विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व, आत्मसम्मान एवं सामाजिक समानता की स्थापना पर आधारित है। उन्होंने स्त्री को दया या करुणा की पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, आत्मनिर्भर एवं जागरूक व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है।

1. स्त्री–विमर्श की अवधारणा

स्त्री–विमर्श का अर्थ स्त्री के जीवन, उसकी समस्याओं, अधिकारों एवं सामाजिक स्थिति पर विचार करना है। यह एक ऐसी विचारधारा है, जो समाज में स्त्री एवं पुरुष के बीच समानता स्थापित करने की पक्षधर है। स्त्री–विमर्श स्त्री के शोषण, उपेक्षा, असमानता एवं सामाजिक बंधनों का विरोध करता है तथा उसकी स्वतंत्र पहचान एवं अस्मिता को महत्व देता है। हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्श विशेष रूप से स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद अधिक प्रभावशाली रूप में सामने आया। आधुनिक महिला लेखिकाओं ने स्त्री की मानसिक पीड़ा, पारिवारिक संघर्ष, आर्थिक समस्याओं एवं सामाजिक असमानताओं को साहित्य में अभिव्यक्ति दी। ममता कालिया ने भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आधुनिक भारतीय स्त्री के जीवन–संघर्ष को अपने उपन्यासों का प्रमुख विषय बनाया।

2. ममता कालिया की नारी–दृष्टि

ममता कालिया की नारी–दृष्टि अत्यंत यथार्थवादी एवं व्यावहारिक है। उन्होंने स्त्री को आदर्शवादी या काल्पनिक रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसके वास्तविक जीवन–संघर्षों एवं समस्याओं को अभिव्यक्ति दी है। उनकी दृष्टि में स्त्री केवल परिवार तक सीमित रहने वाली प्राणी नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र विचारों एवं भावनाओं से युक्त व्यक्तित्व है। उनकी नायिकाएँ अपने अस्तित्व, सम्मान एवं स्वतंत्रता के प्रति सजग हैं। वे समाज द्वारा निर्मित रूढ़ियों एवं परंपराओं का विरोध करती हैं और आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती हैं। ममता कालिया ने विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन को केंद्र में रखा है। उनकी स्त्रियाँ आर्थिक संघर्ष, दांपत्य तनाव, सामाजिक दबाव तथा मानसिक द्वंद्व से गुजरती हैं, किन्तु वे परिस्थितियों के सामने पूर्णतः समर्पण नहीं करतीं। उनके भीतर आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र पहचान की आकांक्षा निरंतर बनी रहती है।

3. स्त्री अस्मिता एवं आत्मचेतना

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता एवं आत्मचेतना का स्वर अत्यंत प्रबल है। उनकी नायिकाएँ अपने अधिकारों एवं अस्तित्व के प्रति जागरूक हैं। वे केवल दूसरों के लिए जीवन जीने के बजाय स्वयं की पहचान स्थापित करना चाहती हैं। 'लड़कियाँ' तथा 'एक पत्नी के नोट्स' जैसे उपन्यासों में स्त्री की आत्मचेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यहाँ स्त्री अपने दमन एवं उपेक्षा को मौन रूप से स्वीकार नहीं करती, बल्कि मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर उसका विरोध करती है।

ममता कालिया ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्री का वास्तविक विकास तभी संभव है जब वह स्वयं अपनी अस्मिता एवं आत्मसम्मान के प्रति सजग हो। उनकी नायिकाएँ आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

4. पुरुषप्रधान समाज का विरोध

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में पुरुषप्रधान सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों एवं असमानताओं का यथार्थ चित्रण किया

है। उन्होंने दिखाया है कि समाज में स्त्री को पुरुष की अपेक्षा कम स्वतंत्रता एवं अधिकार प्राप्त हैं। स्त्री को पारिवारिक मर्यादाओं, सामाजिक परंपराओं तथा नैतिक मानदंडों के नाम पर नियंत्रित किया जाता है, जबकि पुरुष को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। ममता कालिया की नायिकाएँ इस असमानता का विरोध करती हैं और समानता एवं सम्मान की मांग करती हैं।
उनका विरोध उग्र या आक्रामक न होकर व्यावहारिक एवं यथार्थवादी है। वे सामाजिक बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं तथा स्त्री के प्रति समाज की मानसिकता में परिवर्तन की अपेक्षा करती हैं।

5. आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं नारी सशक्तिकरण

ममता कालिया ने स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता को उसके सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आधार माना है। उनके उपन्यासों में कामकाजी स्त्रियाँ आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास करती हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान की भावना विकसित होती है। किन्तु आर्थिक आत्मनिर्भरता के बावजूद स्त्री को सामाजिक एवं मानसिक स्तर पर अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। उसे परिवार और कार्यक्षेत्र दोनों की जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। इस प्रकार उसकी स्थिति दोहरे संघर्ष से घिरी रहती है। ममता कालिया ने यह स्पष्ट किया है कि केवल आर्थिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता एवं स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन भी आवश्यक है। यही विचार उनके स्त्री–विमर्श को अधिक व्यावहारिक एवं यथार्थवादी बनाता है।

6. अन्य महिला लेखिकाओं से तुलना

ममता कालिया का स्त्री–विमर्श समकालीन महिला लेखिकाओं की तुलना में अधिक व्यावहारिक एवं मध्यवर्गीय जीवन के निकट दिखाई देता है।

1. मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी ने स्त्री की संवेदनात्मक पीड़ा एवं पारिवारिक संघर्षों को अभिव्यक्ति दी, जबकि ममता कालिया ने मध्यवर्गीय स्त्री की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।

2. कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती की स्त्रियाँ अधिक विद्रोही एवं स्वतंत्र स्वभाव की हैं, जबकि ममता कालिया की नायिकाएँ व्यावहारिक जीवन–संघर्षों के बीच अपनी पहचान बनाने का प्रयास करती हैं।

3. मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग ने स्त्री की व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं मनोवैज्ञानिक संघर्षों को प्रमुखता दी, जबकि ममता कालिया ने सामाजिक यथार्थ एवं मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को अधिक महत्व दिया।
इस प्रकार ममता कालिया का स्त्री–विमर्श आधुनिक भारतीय मध्यवर्गीय स्त्री के वास्तविक जीवन–संघर्षों से गहराई से जुड़ा हुआ है।
इस प्रकार ममता कालिया का साहित्य हिन्दी स्त्री–विमर्श की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्याओं, संघर्षों, आत्मचेतना एवं अस्मिता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी नायिकाएँ आत्मनिर्भर, जागरूक एवं संघर्षशील हैं, जो पुरुषप्रधान समाज की रूढ़ियों एवं असमानताओं का विरोध करती हैं। ममता कालिया का स्त्री–विमर्श केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक एवं यथार्थवादी है। उन्होंने आधुनिक भारतीय स्त्री के जीवन–संघर्षों एवं मानसिक स्थितियों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। यही कारण है कि उनका साहित्य समकालीन हिन्दी कथा–साहित्य में विशेष महत्व रखता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र "ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण" के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ममता कालिया समकालीन हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त कथाकार हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में आधुनिक भारतीय स्त्री के जीवन–संघर्ष, मानसिक स्थितियों, सामाजिक समस्याओं तथा आत्मचेतना को अत्यंत यथार्थवादी एवं प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनका साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि समाज की वास्तविकताओं एवं विसंगतियों का सजीव दस्तावेज़ भी है।
ममता कालिया ने विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री जीवन को अपने साहित्य का केंद्र बनाया है। उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ पारिवारिक दायित्वों, आर्थिक संघर्षों, दांपत्य तनावों तथा सामाजिक बंधनों के बीच अपने अस्तित्व एवं आत्मसम्मान की तलाश करती दिखाई देती हैं। वे केवल सहनशील एवं त्यागमयी पात्र नहीं हैं, बल्कि आत्मनिर्भर, जागरूक एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में उभरती हैं।
शोध के दौरान यह तथ्य सामने आया कि ममता कालिया की नायिकाएँ पुरुषप्रधान समाज की रूढ़ियों एवं असमानताओं का विरोध करती हैं। वे अपने अधिकारों, स्वतंत्रता तथा सम्मान के प्रति सजग हैं और सामाजिक बंधनों के विरुद्ध मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर संघर्ष करती हैं। उनके साहित्य में स्त्री–विमर्श का स्वर उग्र या विद्रोही न होकर व्यावहारिक एवं यथार्थवादी है। ममता कालिया ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके लिए सामाजिक दृष्टिकोण एवं मानसिकता में परिवर्तन भी आवश्यक है। उनके उपन्यासों में कामकाजी स्त्री की दोहरी जिम्मेदारियों, मानसिक तनावों तथा सामाजिक संघर्षों का अत्यंत संवेदनशील चित्रण मिलता है।
भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से भी ममता कालिया का साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी भाषा सरल, सहज, बोलचाल की तथा व्यंग्यात्मक शैली से युक्त है। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों, पारिवारिक संबंधों तथा स्त्री मन की संवेदनाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनके संवाद स्वाभाविक, पात्रानुकूल एवं जीवन के निकट प्रतीत होते हैं। यही विशेषताएँ उनके साहित्य को अधिक प्रभावशाली एवं प्रासंगिक बनाती हैं। ममता कालिया का स्त्री–विमर्श आधुनिक भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों से जुड़ा हुआ है। उन्होंने स्त्री को दया या करुणा की पात्र के रूप में नहीं, बल्कि आत्मसम्मान एवं स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में स्त्री की अस्मिता, आत्मचेतना एवं सामाजिक समानता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ममता कालिया के उपन्यास आधुनिक भारतीय स्त्री जीवन के संघर्ष, चेतना एवं यथार्थ का महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ हैं। उन्होंने हिन्दी उपन्यास साहित्य को नई दृष्टि, नई संवेदना तथा यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्श को सशक्त स्वर देने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक, साहित्यिक एवं वैचारिक दृष्टि से प्रासंगिक हैं तथा स्त्री जीवन की समस्याओं और आकांक्षाओं को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ सूची

1. कालिया, ममता. बेघर. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002.
2. कालिया, ममता. लड़कियाँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2006.

3. कालिया, ममता. एक पत्नी के नोट्स. नई दिल्ली: राजकमल
4. प्रकाशन, 2004.
5. कालिया, ममता. प्रेम कहानी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2008.
6. कालिया, ममता. दौड़. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस, 2010.
7. कालिया, ममता. दुक्खम–सुक्खम. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन, 2009.
8. कालिया, ममता. छुटकारा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2003.
9. कालिया, ममता. सीट नं. छह. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2001.
10. कालिया, ममता. मुखौटा. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2005.
11. कालिया, ममता. प्रतिदिन. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2007.
12. शर्मा, रामविलास. हिन्दी साहित्य और संवेदना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1998.
13. सिंह, नामवर. कहानी नई कहानी. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2001.
14. यादव, राजेन्द्र. स्त्री विमर्श: स्वरूप और समस्याएँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2003.
15. गुप्ता, उर्मिला. समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकार. नई दिल्ली: साहित्य भवन, 2005.
16. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिन्दी साहित्य की भूमिका. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 1999.
17. गर्ग, मृदुला. स्त्री चेतना और हिन्दी उपन्यास. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन, 2006.
18. भंडारी, मन्नू. महिला लेखन और सामाजिक यथार्थ. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2004.
19. चौधरी, सत्यदेव. समकालीन हिन्दी उपन्यास और नारी विमर्श. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011.
20. सिंह, बच्चन. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
21. पाण्डेय, मैनेजर. साहित्य और समाज. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2002.
22. "ममता कालिया के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री–जीवन."
23. शोध समीक्षा और मूल्यांकन, अंक 12, 2018.
24. "ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना."
25. हिन्दी अनुशीलन शोध पत्रिका, खंड 8, अंक 3, 2019.
26. "समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में ममता कालिया का योगदान."
27. अप्रकाशित शोध–प्रबंध, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2020.
28. "ममता कालिया के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन."
29. आलोचना साहित्य पत्रिका, 2017.
30. "स्त्री–विमर्श के संदर्भ में ममता कालिया के उपन्यास."
31. अप्रकाशित पी–एच.डी. शोध–प्रबंध, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2021.